International Journal of Sanskrit Research 2021; 7(4): 97-100

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2021; 7(4): 97-100
© 2021 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 17-04-2021
Accepted: 08-06-2021

नीतू शर्मा
शोधार्थी, संस्कृत, मोहनलाल सुखाड़िया विश्व विद्यालय, उदयपुर, राजस्थान, भारत

Corresponding Author:
नीतू शर्मा
शोधार्थी, संस्कृत, मोहनलाल सुखाड़िया विश्व विद्यालय, उदयपुर, राजस्थान, भारत

आर्षमहाकाव्य रामायण और महाभारत

नीतू शर्मा

प्रस्तावना

'आर्ष' शब्द का अर्थ है– ऋषियों से संबंधित, अर्थात जो ऋषियों की वाणी से मुखरित होकर उत्पन्न हुआ हो, जो ऋषियों द्वारा लाया गया हो अथवा जो ऋषियों द्वारा किया गया हो, वह आर्ष कहलाता है। चूंकि वेद ऋषियों द्वारा कहीं गई मोखिक रचनाएं है अतः वेद अपौरुषेय कहे गए है परन्तु रामायण और महाभारत ऋषियों द्वारा लिखित रुप में रची गई संसार की सर्वप्रथम रचनाएं है, अतः इन्हें आर्ष महाकाव्य कहा गया है। विभिन्न शब्दकोशों के अनुसार आर्ष शब्द तथा इसके समानार्थी शब्दों की व्युत्पति का अध्ययन करने पर आर्ष शब्द के विषय में हम स्पष्ट रुप से समझ सकेंगे।

आर्ष शब्द तथा इसके समानार्थी शब्दों की व्युत्पति विभिन्न शब्द –कोशों के अनुसार–

1 आर्ष :–(वि.) (स्त्री. षी) (ऋषेरिदम् –अण्)

2 आद्यः– आदौ भव–यत्

इसके विभिन्न अर्थ है जो निम्न प्रकारणे है–

1. प्रथम आदि कालीन
2. मुखिया, प्रमुख, अगुआ–
   आसीन्महीक्षितामाद्य प्रणवश्छन्दसामिव– [1]
3. (समास के अन्त में) प्रारम्भ करके, बगैरा 2, दे. आदि, – द्या– 1 दुर्गा की उपाधि 2 मास का पहला दिनः घुम 1 आरम्भ 2 अनाज, आहार। सम. कविः 'आदि कवि' ब्रह्मा या वाल्मीकि की उपाधि, आदिकवि। – बीजम विश्व का मुख्य या भौतिक कारण जो सांख्यमतानुसार प्रधान या जड़ नियम कहलाता है।[2]

3 आदिः– (वि.) (आ+ दा+ कि)

1. प्रथम, प्रारम्भिक, आदिम–निदान व्यादिकारणम् [3]
2. मुख्य, पहला, प्रधान, प्रमुख– प्रायः समास के अन्त में –इसी अर्थ में नी. वे.
3. समय की दृष्टि से प्रथम– आदि मुख्य कारण अर्थ में अर्थ –संदर्भ :– आरम्भ उपक्रम (विप. अन्त) – अप एवं ससर्जादौ तासु बीजमवासृजत[4] अर्थात समास के अन्त मे प्रयुक्त होकर बहुधा निम्नाकिंत अर्थो में अनूदित किया जाता है– 'आरम्भ करके' अर्गरा 2 इसी प्रकार और भी (उसी प्रकृति और प्रकार के), ऐसे – इन्द्रादि देवाः– इन्द्र आदि अन्य देवता, या भू आदि से आरम्भ होने वाले शब्द धातु कहलाते है और पाणिनी के द्वारा वह प्रायः व्याकरण के शब्द समूह को प्रकृट करने के लिए प्रयुक्त किये गये है, अदादि, दिव्यादि, स्वादि इत्यादि) 2 पहला भाग था खण्ड

4 मुख्य कारण– तम. अन्त (वि.) जिसका आरम्भ और समाप्ति दोनो हो (तम.) आरम्भ और अन्त, वत्– सान्त, समापिका– वह शब्द जिसके आरम्भिक अक्षर पर स्वराघात हो। कवि प्रथम कवि, ब्रह्मा की उपाधि – क्योंकि उसी ने संसार की सर्वप्रथम रचना की तथा वेदों का ज्ञान दिया, वाल्मीकि की उपाधि क्योंकि उसी ने सर्वप्रथम कवियों का पथ–प्रदर्शन किया– जब उन्होंने क्रौच पक्षी के दम्पती के एक पक्षी को मारने वाले व्याध को शाप दिया और उस समय एक श्लोक की रचना की और उनका वही श्लोक अपने–आप कविता के रूप में प्रकृट हुआ। (श्लोकत्वमापज्चत यस्य शोक), इसके पश्चात् ब्रह्मा ने वाल्मीकि को राम का चरित लिखने के लिए कहा, फलस्वरूप संस्कृत साहित्य में प्रथम काव्य 'रामायण' के रूप में प्रकृट हुआ, काण्डम्–रामायण का प्रथम खण्ड।

5 कारणम्– (विश्व का) प्रथम या मुख्य कारण जा वेदान्तियों के अनुसार 'ब्रह्म' है तथा नैयायिकों के अनुसार ,विशेषतः विशेषिको के अनुसार विश्व का प्रथम या भौतिक कारण अणु है, परमात्मा नहीं।

6 काव्यम्– प्रथम काव्य अर्थात् वाल्मीकि रामायण।
आदर्श हिन्दी– संस्कृत– कोश

7 आद्य
लिंगम प्रकारश्चः– क्ली
अर्थ सन्दर्मश्चः – अद्यतेयत् अद् कम्माणि व्यत्।) धान्यं।
इति राजनिर्घण्टः।। अदनीयद्रव्ये त्रि।।[1]
यथा– ''तत्पर्य्युषितमाप्याद्यं हविः शेषञ्च यद्भवेत।
चिरस्थितमपित्वाद्यं'' ———इत्यादि।)[6]

8 शब्द– आद्यकविः
लिंङ्गम प्रकारश्चः – पु.
अर्थ संदर्भश्चः आद्यश्च कविश्चेति कर्म्मधारयः।) वाल्मीकि मुनिः। इति भूरिप्रयोग।
(पुराणकविः ब्रह्म)।

निष्कर्ष
आर्ष शब्द एवं इसके समानार्थी आद्यः, आदि, अनार्ष आदि विभिन्न शब्दों की व्युत्पतियों का अध्ययन करने पर हम यह विदित होता है कि 'आर्ष' का तात्पर्य है प्रथम, आरम्भ के काव्य, जो ऋषियों द्वारा कहे गये है। रामायण और महाभारत आर्ष महाकाव्यों की श्रेणी में आते है। क्योंकि ये ऋषियों की कृति है। ये घटनाएं पहले पूर्वकाल में घटित हो चूकी थी। जिन्हें बाद मे रचा गया। ये दोनों ही महाकाव्य अलग अलग युगों के महान् युगपुरुषों की जीवनगाथा है, उन महान् पुरुषों की युगगाथा जीवन चरित्र है, जिन्होंने भगवान के अंश रूप में विद्यमान रहते हुए इस मृत्युलोक में जन्म लिया और बुराइयों पर हमेशा अच्छाई की ही जीत होगी, इस सत्य का प्रतिपादन किया। सतयुग में ही यह भविष्यवाणी हो गई थी कि जब कलयुग आयेगा तब सब ओर ब्राह्य आडम्बर, भोग विलासिता का बाहुल्य हो जायेगा और मनुष्य विवेकशील ना रहकर विवेकहीन हो जायेगा, वह पथभ्रष्ट होकर निरन्तर गर्त की ओर पतित होता जायेगा इसलिए ऐसे समय में प्रायश्चित स्वरूप जो व्यक्ति आदिकाव्य रामायण का पाठ करेगा तथा श्रीराम के चरित्र को स्तुतिगान करेगा वह अपने पापो से मुक्ति पायेगा इसी जनकल्याण भावना को ध्यान में रखते हुए रामायण और महाभारत महाकाव्यों की रचना हुई। चूंकि लिखित रूप में ये संसार की पहली रचनाएं है, ऋषियों द्वारा रचित है, और पूर्वकाल की घटित घटनाओं पर आधारित जीवन–चरित ग्रंथ है इसलिए ये ऐतिहासिक महाकाव्य आर्ष महाकाव्यों की श्रेणी में रखे गये है।
कुछ अनेक भारतीय हिन्दु ऐसे भी है, जो अज्ञानवश महाभारत और श्रीमद्वाल्मीकिय रामायण को ऐतिहासिक ग्रंथ नहीं मानते और श्रीकृष्ण तथा श्रीरामचन्द्र जी को भी काल्पनिक पुरुष मानते है। यह परम्परा बहुत दुषित और ग्रहित है। यदि इन दोनों ऐतिहासिक ग्रंथों को काल्पनिक मान लिया जाय, तो युग–युगान्तरों से चला आ रहा हिन्दु साम्राज्य का प्राचीन इतिहास ही समाप्त हो जायेगा और हम आज की अंग्रेजी की इस शिक्षा को मानने के लिए विवश हो जाते है कि ईसा से एक हजार नौसौ वर्ष पूर्व मध्य एशिया से आकर आर्य लोगों ने यहां प्रभुत्व जमाया था जबकि ये बिल्कुल गलत है। ये भारत देश की गरीमा को मिटाने के मिथक प्रयास मात्र है।

रामायण– महाभारत का ऐतिहासिक महत्व आज सर्वस्वीकृत तथ्य है। यह इहिास जीवन–संग्राम की हार–जीत का प्रतीक और जीवन के विविध पहलुओं पर प्रकाश डालने वाले ग्रंथों का नित्य स्वाध्याय करते है, उन्हें जीवन में विजय और मुक्ति अवश्य मिलती है।

वाल्मीकि रामायण आर्षकाव्य क्यों?
वाल्मीकि रामायण संस्कृत साहित्य का एक आरम्भिक महाकाव्य है जो संस्कृत भाषा में अनुष्टूप छन्दों में रचित है, इसमें श्री राम के चरित्र का उत्तम एवं वृहद् विवरण काव्य के रूप में उपस्थित हुआ है। महर्षि वाल्मीकि द्वारा रचित होने के कारण इसे वाल्मीकि रामायण कहा जाता है। वर्तमान में राम के चरित्र पर आधारित जितने भी ग्रंथ उपलब्ध है, उन सभी का मूल महर्षि वालमीकिकृत रामायण – वाल्मीकिय रामायण ही है। वाल्मीकिय रामायण के प्रणेता महर्षि वाल्मीकि को आदिकवि माना जाता है और इसीलिए यह महाकाव्य आदिकाव्य/आर्षकाव्य माना गया है। यह महाकाव्य भारतीय संस्कृति के महत्वपूर्ण आयामों को प्रतिबिम्बत करने वाला होने से साहित्य रूप में अक्षय निधि है।
वाल्मीकिय रामायण एक आर्ष महाकाव्य की श्रेणी में आता है इसका विभिन्न दृष्टिकोणों से अध्ययन किया जा सकता है जो यह बात सिद्ध करते है कि रामायण एक आर्ष महाकाव्य। आद्य। आदि महाकाव्य है। ये दृष्टिकोण है–

1. रचना काल का दृष्टिकोण
2. रचना उपक्रम की दृष्टि से
3. विभिन्न कवियों के वाक्यों के दृष्टिकोण से (कालिदास, आदि
4. ऐतिहासिक के दृष्टिकोण से
5. प्राचीन ग्रंथों में वाल्मीकिय रामायण के उल्लेख के दृष्टिकोण से वाल्मीकि रामायण के प्रत्येक सर्ग के अन्तमें – ''इत्यार्षे श्रीमद्रमायणे वाल्मीकिय आदिकाव्यें ये शब्द प्रयुक्त हुए है। भवभूति और आनन्दवर्धन ने उत्तर रामचरित व ध्वन्यालोक में उन्हें आदिकवि कहा हैः–

उत्तररामचरित– ''आद्यः कविरसि''[7]
ध्यवन्यालोक – ''काव्यस्यात्मा स एवार्थः तथा चादिकवेः पुरा।''

कालिदास ने रामायण को प्रथम पद्धति कहा है।:–

''स्वकृति गापयामास कविप्रथम पद्धतिम्।''[8]
डा. रामस्वामी इस विषय में लिखते हैं कि ''वाल्मीकि निस्संदेह आदिकवि है, वे प्राचीनतम व श्रेष्ठतम कवि है।''[9]

इस रूप में रामायण आदिकाव्य ल्वयंसिद्ध है। श्रीमद्वाल्मीकिय रामायण के उत्तरकाण्ड के में भी यही बात कही गई है–

''आदिकाप्यमिदं त्वार्षं पुरा वाल्मीकिना कृतम्।।
यः श्रणोति सदा भक्तिया स गच्छेस वैष्णवीं तनुम्।।''[10]

अर्थात् पूर्वकाल में जो वाल्मीकि द्वारा निर्मित इस आदिकाव्य, आर्ष रामायण का सदा भक्तिभाव से श्रवण करता है वह भगवान के विष्णु धाम को प्राप्त करता है।
रामायण की कथा का स्त्रोत ऐतिहासिक है, इसका प्रमाण स्वयं रामायण से प्राप्त होता है। रामायण में उल्लेख है कि जिस वंश में सगर नाम के राजा हुए, जिनके 60 पुत्रों ने समुद्रों को खनन किया था।[11]
रामायण महाकाव्य का ऐतिहासिकता को प्रमाणित करते ब्रह्मदेव के महर्षि वाल्मीकि को ये वाक्य अग्रिम पद्य में वर्णित है जो रामायण महाकाव्य को सत्यता को भी प्रमाणित करती है। और इन्हे कोरी कल्पना मानने वाले तर्कों को खण्डित करते है।

ब्रह्माजी कहते हैः–''इस काव्य में अंकित तुम्हारी कोई भी बात झूठी नहीं होंगी, इसलिए तुम श्री रामचन्द्र जी की परमपवित्र एवं मनोरम कथा को श्लोकबद्ध करके लिखो।।''[12]
इन महात्मा इक्ष्वाकु वंश के राजा से यह कथा उत्पन्न हुई। जो रामायण के नाम से प्रसिद्ध है। रामायण की कथा की ऐतिहासिकता

के प्रमाण के लिए रामायण में इक्ष्वाकु वंश के राजाओं से संबंधित राज्य व निश्चित भू–भाग का भी उल्लेख है। रामायण में उल्लेख है कि सरयू नदी के किनारे धनधान्य से सम्पन्न कौशल नाम का जनपद था।[14]

इसमें मानवों के राजा मनु द्वारा निर्मित अयोध्या नगरी थी। इसमें राजा दशरथ रहा करते थे । उन्ही राजा दशरथ की रानी कौशल्या के गर्भ से राम का जन्म हुआ। वे राम ही इक्ष्वाकु वंश को बढ़ाने वाले थे। आसीन हो जाने पर उनके चरित्र उन्हीं राम के राजसिंहासन तक का वर्णन वाल्मीकि रामायण में किया है।[15]

वी. वी. कामेश्वर अरयर का भी मत यही है कि भारतीय परम्परा का समग्र संस्कृत साहित्य में रामके ऐतिहासिक अस्तित्व को स्वीकार किया गया है।[16]

ऐसा प्रतीत होता है कि महर्षि ने उसे गेयता के कारण, गीत, कथात्व के कारण आख्यान अनुभूति पूर्ण होने के कारण काव्य तथा ऐतिहासिक होने के कारण इतिहास कहा है।[17]

रामायण महाकाव्य एक ऐतिहासिक महाकाव्य है अर्थात रामायण के जो पात्र है, घटनाएं है आदि ये सभी पूर्वकाल में घटित हो चुकी है और कालान्तर में नारदमुनि (ब्रह्माजी के पुत्र)के मुख से महर्षि वाल्मीकि रामायण कथा का श्रवण करते है। फिर एक घटना के घटित होने पर अचानक ही तमसा नदी के तीर्थ घाट पर स्नान करते हुए ही उनके मुखसे श्लोक निकलता है। और तय विधान के अनुसार ब्रह्माजी स्वयं वाल्मीकि जी के पास आकर उसी श्लोक के प्रारम्भ से रामायण की रचना करने को कहते है। उनके आदेशानुसार अपने मन में संकल्प करते हुए महर्षि वाल्मीकि बुद्धिमान् श्री राम के जीवनवृत का पुनः भलीभांति साक्षात्कार करने का प्रयास करते है।' वे पुवार्ग कुशों के आसन पर बैठ गये और विधिवत् आचमन करके हाथ जोड़ें हुए स्थिर भाव से स्थिर हो योगधर्म समाधि के द्वारा श्री राम आदि के चरित्रों का अनुसंधान करने लगे।

''उप स्पृश्योदकं सम्यंग्नमुनिः स्थित्व कृताञ्जलिः।
प्राचीनग्रेषु दर्भेषु धर्मेणान्वेषते गतिम्।''[18]

श्री राम लक्ष्मण, सीता तथा राज्य और रानियों सहित राजा दशरथ से संबंध रखने वाली जितनी बातें थीं– हँसना, बोलना, चलना और राज्यपालन आदि जितनी चेष्टाएं हुई– उन सबका महर्षि ने अपने योगधर्म के बल से भली–भाँति साक्षात्कार किया सत्य प्रतिज्ञ श्री रामचन्द्र जी ने लक्ष्मण और सीता जी के साथ वन में विचरते समय जो–जो लीलाएं की थीं, वें सब उनकी दृष्टि में आ गई।

योगविद्या का आश्रय लेकर उन धर्मात्मा महर्षि ने पूर्वकाल में जो–जो घटनाएँ घटित हुई थीं, उन सबको वहाँ पर हाथ पर रखे हुए आँवलिक की तरह प्रत्यक्ष देखा ।

''ततः पश्यति धर्मात्मा .....यथां।''[19]

सभी के मन को प्रिय लगने वाले भगवान् श्री राम के सम्पूर्ण चरित्र का योगधर्म (समाधि) के द्वारा यथार्थरूप से निरिक्षण करके महाबुद्धिमान् महर्षि वाल्मीकि ने उन सबको महाकाव्य का रूप देने की चेष्टा की।

महात्मा नारद जी ने पहले जैसा वर्णन किया था, उसी क्रम में भगवान वाल्मीकि मुनि ने रघुवंशविभूषण श्री राम के चरित्रविषयक रामायण काव्य का निर्माण किया।

श्री राम के जन्म, उनके महान् पराक्रम, उनकी सर्वानूकूलता, लोकप्रियता, क्षमा, सौम्यभाव तथा सत्यशीलता का इस महाकाव्य में महर्षि ने वर्णन किया।

5 ततः सर्व.....कतुर्मुद्यतः।[20]
स यथा कथितं.....मुनिः।[21]

रामायण की घटना पूर्व में घटित हो चूकी थी और बाद में इसे जीवन चरित के रूप में वाल्मीकि मुनि ने लिखा– इसका वर्णन वा. रा. के बालकाण्ड़ के चतुर्थ सर्ग में मिलता है

प्राप्त राजस्य रामस्य वाल्मीकिर्भगवानृषिः।
चकार चरितं कृत्सनं विचित्रपदमर्थवत्।।[22]

श्री रामचन्द्र जी ने जब वन से लोटकर राज्य का शासन अपने हाथों मे लिया, उसके बाद भगवान् वाल्मीकि ने उनके सम्पूर्ण चरित्र के आधार पर विचित्र पद और अर्थ से युक्त रामायणकाव्य का निर्माण किया।।

उत्तरकाण्ड के अंतिम सर्ग 110 वें सर्ग में भी इसे ऐतिहासिक काव्य कहा है

आर्ष महाकाव्यों में महाभारत

आर्ष महाकाव्यों की गणना में दूसरा नाम महाभारत का लिया जाता है। महाभारत में भारतवशियों के चरित्र का वर्णन है, इस कारण इसे महाभारत कहा जाता है। इसकी रचना वेदव्यास जी ने अपनी योग शक्ति द्वारा पूर्व घटित सम्पूर्ण वृतान्त को साक्षात् देखकर वर्णित किया है, इस कारण यह इतिहास कहलाता है। अनुक्रमणिका पर्व में एक जगह उल्लेख आता है

'' भारतस्येइतिहासस्य धर्मेणान्वीध्य तां गतिम्।
प्रविश्ययोगं ज्ञानेन सोडपश्यत् सर्वमन्ततः।।''[23]

अर्थात ध्यायनयोग में स्थित हो उन्होंने धर्मपूर्वक महाभारत इतिहास के स्वरूप का विचार करके ज्ञानदृष्टि द्वारा आदि से अन्त तक सब कुछ प्रत्यक्ष की भाँति देखा और इस ग्रंथ का निर्माण किया। ''

महाभारत में वर्णित जो पात्र, नगर, जीवन चरित्र वर्णन आदि वर्णित है वे कोरी कल्पना नहीं हो सकते, क्योंकि कल्पना मात्र से इतने विशाल ग्रंथ का निर्माण असंभव है।

अनुक्रमणिका पर्व के अन्तर्गत ही अन्यत्र वर्णित है।

''भूतस्थानानि सर्वाणि रहस्ये त्रिविधं चयत्।
वेदायोगःसविज्ञानों धर्मोऽर्थः काम एव च।।
धर्मार्थकामयुक्तानि शास्त्राणि विविधानि च।
लेकयात्राविधानं च सर्व तद् दृष्टवानृषि।।
इतिहासाः सवैद्याख्या विविधाः श्रुतयोअपि च।
इह सर्व मनुकांत मुक्ते ग्रन्थस्य लक्षणम् ।।[24]

अर्थात् भगवान वेद व्यास ने अपनी ज्ञानदृष्टि से सम्पूर्ण प्राणियों के निवासस्थान, धर्म, अर्थ, काम के भेद से त्रिविध रहस्य, कर्मोपासना ज्ञानरूप वेद, विज्ञान सहित योग, धर्म, अर्थ एवं काम, धर्म, काम और अर्थरूप तीन पुरुषार्थों के प्रतिपादन करने वाले विविध शास्त्र, लोकव्यवहार की सिद्धि के लिए आयुर्वेद, धनुर्वेद, स्थापत्यवेद, गान्धर्ववेद आदि लौकिक शास्त्र सब उन्हीं दशज्योति आदि से हुए हैं– इस तत्व को और उनके स्वरूप को भलीभांति अनुभव किया।

उन्होंने ही इस महाभारत ग्रंथ में व्याख्या के साथ उस सब इतिहास का तथा विविध प्रकार की श्रुतियों के रहस्य आदि का पूर्णरूपेण निरूपण किया गया है और इस पूर्णता को ही इस ग्रंथ का लक्षण बताया गया है।

स्वयं वेदव्यासजी ने अपने महाकाव्य महाभारत ग्रंथ में भी इसका इतिहास होना स्वीकार किया है –

तपसा ब्रह्मचर्येण व्यस्य वेदं सनातनम्।
इतिहासमिमं चक्रे पुण्यं त्यत्वतीसुतः।।[25]

अर्थात् सत्यवती नंदन भगवान व्यास ने अपनी तपस्या एवं ब्रह्मचर्य की शक्ति से सनातन वेद का विस्तार करके इस लोक पावन

पवित्र 'इतिहास' का निर्माण किया है।
श्री वेदव्यास जी ने महाभारत को आद्य आर्ष काव्य माना है। महाभारत में ही एक जगह वर्णित है – इस महाभारत ग्रंथ में व्यास जी ने कुरुवंश के विस्तार, गांधारी की धर्मशीलता, विदुर की उत्तमप्रज्ञा और कुंतीदेवी के धैर्य का भलीभांति वर्णन किया है। महर्षि भगवान व्यास ने इसमें वसुदेवनंदन श्रीकृष्ण के माहात्म्य, पाण्डवों की सत्यपरायणता तथा धृतराष्ट्र पुत्र दुर्योधन आदि के दुर्व्यवहारों का स्पष्ट उल्लेख किया है।

इदं शतसहस्त्रं तु लोकानां पुण्यकर्मणाम्
उपाख्यानैः सह ज्ञेयमाद्यं भारतमुत्तमम्।।[26]

अर्थात् पुण्यकर्मा मानवों के उपाख्यानों सहित एक लाख श्लोकों के इस उत्तम ग्रंथ को आद्य भारत जानना चाहिए।
व्यास जी सर्वप्रथम उपाख्यान भाग को छोड़कर चौबीस हजार श्लोकों की भारत संहिता बनाई, जिसे विद्वान जन भारत कहते हैं। इसके पश्चात् महर्षि ने पुनः पर्व सहित ग्रंथ में वर्णित वृत्तांतों की अनुक्रमणिका (सूची) का एक संक्षिप्त अध्याय बनाया जिसमें केवल डेढ़ सौ श्लोक है। व्यास जी ने सबसे पहले अपने पुत्र शुकदेव जी को इस महाभारत ग्रंथ का अध्ययन कराया।
तदनन्तर उन्होंने दूसरे–दूसरे सुयोग्य (अधिकारी एवं अनुगत) शिष्यों को इसका उपदेश दिया। तत्पश्चात् भगवान व्यास जी ने साठ लाख श्लोकों की एक दूसरी संहिता बनाई।
उसके तीस लाख श्लोक देवलोक में समादृत हो रहे हैं, पितृलोक में पन्द्रह लाख तथा गन्धर्वलोक में चौदह लाख श्लोकों का पाठ होता है।

एकं शतसहस्त्रं तु मानुषेषु प्रतिष्ठितम्।
नरदोऽश्रावयद् दैवानसितो देवलः पितृन्।।[27]

इस मनुष्य लोक में एक लाख श्लोकों का 'आद्य भारत' (महाभारत) प्रतिष्ठित है। देवर्षि नारद ने देवताओं को और असित देवल ने पितरों को इसका श्रवण कराया है।

निष्कर्षः– उपरोक्त अध्ययन करने पर यह प्रमाणित होता है आर्ष महाकाव्यों की गणना में प्रथम कृति रामायण का ही नाम गिना जाता है। वाल्मीकि कृरामायण के प्रत्येक सर्ग की समाप्ति पर भी यह लिखा है '' इत्यार्षे श्री मद्रामायणे वाल्मीकिय आदिकाव्ये.....

आदिकाव्यमिदं त्वर्षि पुरा वाल्मीकिना कृतम्।

उपसंहार

रामायण और महाभारत एक अनमोल विरासत है। भारतीय हिन्दु धर्म की! विश्व को विषद् कथा–वस्तु वाले महाकाव्य 'महाभारत' में भारतीय जन जीवन के चित्रण में भौगोलिक स्थूलता से लेकर ज्ञान एवं अध्यात्म की उच्चतम स्थितियों का भी निरुपण है। शायद इसलिए इसे भारतीय संस्कृति का विश्वकोश माना जाता है।
सृजनशीलता के क्रम में 'रामायण' एवं 'महाभारत' जैसे महाकाव्यों का जन्म हुआ। ये दोनों महाकाव्य सुदूर अतीत की विकासात्मक सभ्यताओं की अनमोल देन के रुप में हमें प्राप्त हुए है। इनमें भारतीय संस्कृति का महत्वपूर्ण क्रमिक इतिहास रचित है।
छान्दोग्योपनिषद्[12] में बताया गया है कि मन निधन है क्योंकि पुरुष की सम्पूर्ण इन्द्रियों द्वारा ग्रहण किए गए सभी भोग्यरूप विषय मन में ही रखे जाते हैं और वह इन्द्रियों के विषयों में व्यापक है।

संधर्व सूची

1. रघुवंशम् 1/11
2. संस्कृत – हिन्दी शब्द कोष – वामन शिवराम अपटे
3. अमर शब्दकोश
4. मनु 1/8, भग. 2/41, जगदादिग्नादिस्वत्वम् कु. 2/9,
5. आदर्श हिन्दी संस्कृत शब्द –कोश
6. मनुः स्मृति 5।24।
7. भवभूति रचित उत्तरामचरित/ द्वितीय अंक
8. रघुवंश महाकाव्यम् 15/33
9. डा. रामेश्वरप्रसाद गुप्त वा. रा. मं राज. तत्व प्र. स. 28–29
10. व. रा./6/111 सर्ग/ 16 वां पद्य
11. वा. रा. 1/5/12
12. वही/उतरकाण्डं/1/5/30
13. वही/6/110/16
14. वही/1/5/5
15. डा. रामेश्वर प्रसाद गुप्त, बा. रा. राजनीतिक तत्व प्र. स. 42–48
16. प्रभाकर दीक्षित, वात्र रात्र राजनीति विचार प्र. स. –7
17. वा.रा. /1/ 3/2
18. वही/16
19. वा.रा. /1/ 3/7
20. वही/9
21. वा.रा. /1/4/5
22. श्री महाभारत/आदिपर्व/ अनुक्रमणिका पर्व/ प्रथम अध्याय/$28\frac{1}{2}$
23. वही/ 48–50
24. श्री महाभारत/आदिपर्व/ अनुक्रमणिका पर्व/ प्रथम अध्याय/54वा पद्य
25. वही /99 – 101–2
26. श्री महाभारत/आदिपर्व/ अनुक्रमणिका पर्व/ प्रथम अध्याय/107